Date :- 09/07/2020	Degree Part-II (Hons)
Content Writer :-	Paper - II
Dr. Akhay Kumar Pathak	Content of the Paper:
Deptt. of Economics,	Micro Economics
Marwari College,	Module - 6
Darbhanga (LNMU)	

TOPIC :- ANALYSIS OF PARETO'S OPTIMUM

कल्याणकारी अर्थशास्त्र को प्रतिस्थापित करने में प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों का अहम योगदान रहा है। इनमें मुख्य रूप से मार्शल एवं पीगू का नाम लिया जाता है। लेकिन बाद के समय में नवीन कल्याणकारी अर्थशास्त्र के प्रतिपादकों ने समाज कल्याण की नवीन अवधारणा के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

नवीन कल्याणकारी अर्थशास्त्र के प्रतिपादकों में प्रो० विल्फ्रेडो पैरेटो का नाम मुख्य रूप से लिया जाता है। प्रो० पैरेटो पहले अर्थशास्त्री थे जिन्होंने समाज-कल्याण में वृद्धि अथवा कमी के मापन हेतु एक निश्चित मापदण्ड प्रस्तुत किया। इनके मापदण्ड अथवा कसौटी को "पैरेटो के अनुकूलतम सिद्धांत" के नाम से जाना जाता है।

प्रो० पैरेटो के कल्याण कसौटी को निम्नांकित रूप से भी व्यक्त किया जा सकता है:- "आर्थिक कल्याण की दृष्टि से एक परिवर्तन को वांछनीय या सुधार लानेवाला तभी कहा जा सकता है जबकि वह परिवर्तन, बिना किसी नुकसान पहुँचाए हुए, कम से कम एक व्यक्ति की स्थिति को अच्छा करता है।"

इस कसौटी के दो महत्वपूर्ण पहलू हैं:-

(I) यदि कोई आर्थिक क्रिया एक व्यक्ति अथवा वर्ग को हित पहुँचाती है और किसी दूसरे व्यक्ति अथवा वर्ग को अहित नहीं पहुँचाती तो वह क्रिया वांछनीय है।

(II) यदि किसी व्यक्ति या वर्ग को हित पहुँचाने में दूसरे व्यक्ति अथवा वर्ग का अहित हो रहा है, चाहे वह अहित कितना ही न्यून रूप में हो तो वह क्रिया वांछनीय नहीं कही जा सकती।

कल्याण की उपर्युक्त कसौटी या दशा के आधार पर 'समाज के लिए अधिकतम कल्याण

की स्थिति' अर्थात् सामाजिक अनुकूलतम की निकाला जा सकता है तथा इसे निम्नांकित रूप में व्यक्त किया जा सकता है:- "वितरण के किसी एक रूप को दिया हुआ मान कर एक सामाजिक अनुकूलतम वह स्थिति है जिसमें रहकर उत्पादन तथा विनिमय में कोई पुनर्संगठन किसी एक व्यक्ति को बिना दूसरे की हानि पहुँचाये अच्छी स्थिति में नहीं ला सकता।" तटस्थता वक्र तकनीक के आधार पर विश्लेषण करने से यह स्पष्ट होता है कि "अनुकूलतम कल्याण की स्थिति वह है जहाँ से किसी भी व्यक्ति को एक ऊँची तटस्थता वक्र पर ले जाना संभव नहीं है यदि तक कि किसी दूसरे व्यक्ति को एक नीची तटस्थता वक्र रेखा पर न पहुँचाया जाए।"

पेरीटो सिद्धांत की मान्यताएँ:-

पेरीटो सिद्धांत का विवेचन निम्नांकित सिद्धांतों की मान्यताओं पर आधारित है:-

(1) उपयोगिता के गणनात्मक विचार की अपेक्षा उपयोगिता के क्रमवाचक विचार को स्वीकार किया है।

(2) कल्याणवादी अर्थशास्त्र को नैतिक निर्णयों से स्वतंत्र करने हेतु उपयोगिता की अंतः वैयक्तिक तुलना की संभावना को अमान्य कर दिया है।

(3) उपयोगिता को वस्तुओं एवं सेवाओं की मात्रा पर निर्भर माना है।

(4) वितरण की समस्याओं को सम्मिलित करने की अपेक्षा केवल उत्पादन एवं विनिमय की कुशलता को ही सम्मिलित किया गया है।

(5) प्रत्येक व्यक्ति समस्त वस्तुओं की कुछ मात्रा का क्रम अवश्य करता है।

(6) प्रत्येक व्यक्ति अपने हितों का अधिकतम करने का प्रयास करता है।

Maharaza

Date ___/___/______ Page No.: (4)

पैरीटो सिद्धांत की दशाएँ :- पैरीटो अनुकूलतम दशाओं को प्राप्त करने के लिए निम्नांकित दशाओं को व्यक्त किया जा सकता है :-

(i) उपभोक्ताओं के बीच में वस्तुओं के अनुकूलतम वितरण या आवंटन की दशा।
(ii) साधनों के अनुकूलतम वितरण की दशा।
(iii) विशिष्टता की अनुकूलतम मात्रा की दशा।
(iv) अनुकूलतम साधन वस्तु के संबंध में दशा, अर्थात साधन के अनुकूलतम प्रयोग की दशा।
(v) उत्पादन के अनुकूलतम नियंत्रण की दशा।
(vi) साधन की इकाई का समय के अनुकूलतम आवंटन की दशा।
(vii) संपत्तियों के अंतःकालिक अनुकूलतम आवंटन की दशा।

पैरीटो के अनुकूलतम दशाओं के संतुष्टि के लिए पूर्ण प्रतियोगिता का होना जरूरी है, परन्तु पूर्ण प्रतियोगिता एक आदर्श है। समस्त प्रतियोगिता या तो एकाधिकारात्मक या फिर अल्पाधिकारात्मक होती है। इसलिए अनुकूलतम की शर्त पूरा नहीं हो पाती तथा सीमांत लागत से कीमत अधिक होती है तथा स्रोतों का चिरकालिक कुवितरण रहता है। अर्थात पूंजीवाद के अंतर्गत उत्पादन तथा वितरण की अनुकूलतम दशाएं कभी पूर्ण नहीं हो पातीं। पैरीटो की अनुकूलावस्था तब लागू होती है जब उपभोग क्षेत्र एवं उत्पादन क्षेत्र दोनों में इस सिद्धांत का समुचित अनुपालन हो सके।

Maharaza